अनुक्रमणिका

क्रम. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा, रूप तथा इकाइयाँ (Language, Form and Unit)	7
2.	वर्ण विचार (Phonology)	13
3.	शब्द-विचार (Morphology)	19
4.	वाक्य (Sentence)	23
5.	संज्ञा (Noun)	28
6.	लिंग (Gender)	32
7.	वचन (Number)	36
8.	सर्वनाम (Pronoun)	40
9.	विशेषण (Adjective)	45
10.	क्रिया (Verb)	52
11.	काल और अव्यय (Tense and indeclinable Words)	56
12.	कारक (Case)	67
13.	शब्द-भंडार (Vocabulary)	70
14.	विराम-चिह्न (Punctuation-Marks)	79
15.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)	83
16.	अपठित गद्यांश (Unseen Passage)	89
17.	संवाद-लेखन (Dialogue Writing)	93
18.	पत्र-लेखन (Letter Writing)	95
19.	अनुच्छेद-लेखन (Paragraph Writing)	98
20.	निबंध-लेखन (Essay Writing)	101
21.	कहानी-लेखन (Story Writing)	108
22.	चित्र-वर्णन (Picture Description)	114
	स्वमूल्यांकन पत्र-1	117
	स्वमूल्यांकन पत्र-2	119

EDITONE INTERNATIONAL

अध्याय 1

भाषा रूप तथा इकाइयाँ
(Language: Form and Unit)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! पिछले अध्याय में हम भाषा, बोली तथा लिपि आदि के विषय में पढ़ चुके हैं। अतः हमें ज्ञात हो चुका है कि बोली और उपभाषा से भाषा का स्थान ऊँचा होता है।

इस कक्षा में हम भाषा को और विस्तारपूर्वक जानने का प्रयास करेंगे।

भाषा की आवश्यकता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा वह अपने इसी गुण को स्पष्ट करते हुए परिवार एवं समाज के मध्य रहता है। जब वह किसी समाज में रहता है, तो निश्चित है कि उसे बातचीत करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए जो साधन है वह संकेतों, अस्पष्ट ध्वनियों आदि की यात्रा तय करते-करते अब शुद्ध और परिमार्जित रूप में भाषा तक पहुँच गया है।

भाषा का इतिहास

बच्चो, आपने इतिहास में आदिमानव के विषय में पढ़ा होगा। वह मूलतः एक चौपाया जीव था तथा अस्पष्ट ध्वनियों और विभिन्न शारीरिक भावों के द्वारा अपनी बात को समझाता था। धीरे-धीरे उसका शारीरिक विकास हुआ, फिर वह अपने दो पाँवों को बाँहों की तरह प्रयोग करने लगा, उसके मस्तिष्क का विकास हुआ। वह आसपास घटनेवाली घटनाओं को समझने लगा, उसकी ध्वनियाँ स्पष्ट हुईं और वह बोलने लगा। वह स्वयं को अन्य जीवों से ऊँचा मानने लगा। अब वह अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में लग गया और उसे अधिक स्पष्ट और सुचारू भाषा की आवश्यकता पड़ने लगी। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए वह विभिन्न प्रकार की बोलियाँ बोलने लगा।

अभी तक मनुष्य के पास भाषा के नाम पर केवल दो साधन थे– 1. सांकेतिक भाषा 2. मौखिक भाषा। परंतु जब वह निरंतर विकास की राह पर बढ़ता गया, तो उसका काम केवल इन दो भाषायी साधनों पर निर्भर रहना असंभव होने लगा। अब उसे लिखने की आवश्यकता महसूस होने लगी। मानव ने स्वयं ही मौखिक ध्वनियों के लिए लिखित चिह्न बना लिए और इस प्रकार तीसरा महत्वपूर्ण रूप लिखित भाषा का विकास हुआ।

अतः–

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम अपने विचार, शब्दों को लिखित रूप में दूसरों तक पहुँचा सकते हैं और स्वयं समझ सकते हैं।

इस प्रकार भाषा के तीन रूप विकसित हुए–

1. मूक अथवा सांकेतिक स्वरूप, 2. मौखिक भाषा, 3. लिखित भाषा

1. मूक अथवा सांकेतिक स्वरूप– भाषा के इस रूप में केवल शारीरिक गतिविधियों से अपनी बातों को दूसरों तक पहुँचाया जाता है। आज भी इस रूप का प्रयोग होता है; जैसे– शिक्षक पढ़ाते समय, गूँगे व्यक्ति अथवा किसी क्षेत्र की भाषा न जानने वाले, चौराहे पर खड़ा यातायात नियंत्रण करने वाला पुलिस अधिकारी इत्यादि। अत:

मुख, हाथ तथा नेत्रों आदि के द्वारा अपनी बातों को दूसरे तक पहुँचाना मूल भाषा अथवा सांकेतिक स्वरूप कहलाता है।

2. मौखिक भाषा– जब दो व्यक्ति परस्पर बात करते हैं, तो वह मुख से बोले गए शब्दों का प्रयोग करके विचारों को एक-दूसरे तक पहुँचाते हैं। ये शब्द छोटी-छोटी ध्वनियों के परस्पर मेल से बने होते हैं। भाषा का यह रूप मौखिक रूप (मौखिक भाषा) कहलाता है। अत:

अपने शब्दों को मुख से बोलकर विचारों के माध्यम से प्रकट करने की विधि मौखिक भाषा कहलाती है।

3. लिखित भाषा– उन्नति के पथ पर लगातार अग्रसर होने के कारण मानव ने धीरे-धीरे बोली जाने वाली ध्वनियों के लिए लिखित चिह्न बना लिए। इन चिह्नों का प्रयोग करके बोले जाने वाले शब्द लिखे जाने लगे। दूर बैठे व्यक्तियों को संदेश आदि भेजने के लिए इस लिखित प्रणाली का प्रयोग होने लगा। भाषा का यह रूप लिखित भाषा कहलाया। अत:

अपने लिखे हुए शब्दों को उचित रूप से प्रयोग करके ध्वनि चिह्नों के माध्यम से प्रकट करने की विधि को लिखित भाषा कहते हैं।

- **मातृभाषा–** बालक जिस परिवार में जन्म लेता है, वह सर्वप्रथम उसी भाषा को सीखता है। अत: अपने परिवार द्वारा बोली जाने वाली जिस भाषा को बच्चा सीखता और बोलता है, उसे 'मातृभाषा' कहते हैं।
- **राष्ट्रभाषा–** जिस भाषा का प्रयोग राष्ट्र के अधिकांश भू-भाग पर बोलने व समझने के लिए किया जाता है, उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं।

- **राजभाषा–** जिस भाषा का प्रयोग देश के राजकाज और कार्यालयों आदि में किया जाता है, उसे राजभाषा कहते हैं। भारत-वर्ष में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में राजकाज और कार्यालयी कार्य किए जाते हैं। लेकिन हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

- **अंतरराष्ट्रीय भाषा–** कुछ भाषाएँ अपने देश के अलावा भी दूर-दूर तक प्रयोग की जाती हैं। उन्हें बाहरी देशों के लोग भी अपना लेते हैं। ऐसी भाषाओं को अंतरराष्ट्रीय भाषा कहते हैं; जैसे- अंग्रेज़ी भाषा इंग्लैंड के बाहर भी लगभग सभी देशों में बोली जाती है। अत: यह अंतरराष्ट्रीय भाषा है।

- **मानक भाषा–** विभिन्न भाषाविदों के द्वारा भाषा को एक रूप देने के लिए जिस रूप को प्रधानता दी जाती है, उसे भाषा का मानक रूप कहा जाता है; जैसे- गङ्गा - गंगा, अन्दर - अंदर आदि।

- **बोली और भाषा में अंतर–** भाषा के अल्पविकसित रूप को बोली कहा जाता है। भाषा का प्रयोग जहाँ व्यापक स्तर पर होता है, वहीं बोली का प्रयोग सीमित क्षेत्र में होता है। भाषा के भेद होते हैं, जबकि बोली का कोई रूप नहीं होता। भाषा में साहित्य-सृजन होता है, जबकि बोली में साहित्य-सृजन नहीं होता, जो केवल मौखिक रूप होता है। भारत-वर्ष में कुल 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है।

भारत की मान्यता प्राप्त भाषाएँ

हिंदी	असमिया	बांग्ला	डोगरी	बोडो	उर्दू
नेपाली	गुजराती	कन्नड़	कश्मीरी	कोंकणी	मैथिली
मलयालम	मराठी	मणिपुरी	उड़िया	पंजाबी	संस्कृत
संथाली	सिंधी	तमिल	तेलुगू		

लिपि– मुख से जो ध्वनियाँ निकलती हैं, उन्हें लिखित रूप देने के लिए जो चिह्न निश्चित किए गए हैं, इन चिह्नों को वर्ण कहते हैं। इन वर्णों को लिखने की विधि लिपि कहलाती है। अत:

मुख से बोलते समय निकलने वाली ध्वनियों को लिखने की विधा में लिपि कहा जाता है।

भाषाएँ और उनकी लिपियाँ

भाषा	लिपि
संस्कृत	देवनागरी
उर्दू	फारसी

भाषा	लिपि
बांग्ला	बांग्ला
मराठी	देवनागरी

भाषा	लिपि
हिंदी	देवनागरी
अंग्रेज़ी	रोमन

EDITION INTERNATIONAL

गुजराती	देवनागरी
फ्रांसीसी	रोमन

जर्मन	रोमन
पंजाबी	गुरुमुखी

नेपाली	देवनागरी
रूसी	सिरिलिक

साहित्य– भाषा के विभिन्न विचार एवं सूचनाओं के लिखित रूप के संचित कोष को साहित्य कहा जाता है। साहित्य के माध्यम से लिखित रचनाओं को सँजोकर रखते हैं।

साहित्य के प्रकार

- गद्य साहित्य
- पद्य साहित्य

- **गद्य साहित्य–** जब हम अपने विचारों को विभिन्न विधाओं; जैसे- कहानी, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा, पत्र आदि रूपों में लिखते हैं, तब उसे गद्य साहित्य कहते हैं।
- **पद्य साहित्य–** अपने विचारों को काव्य-शैली (गीत, कविता, दोहा, पद, चौपाई, गजल आदि रूपों) में लिखना पद्य साहित्य कहलाता है।

व्याकरण:

बोलते, पढ़ते तथा लिखते समय हम जिस भाषा का प्रयोग कर रहे हैं, वह शुद्ध है अथवा नहीं, इसका ज्ञान हमें व्याकरण कराता है। अत:

व्याकरण ऐसा शास्त्र है, जो हमें भाषा को शुद्ध रूप से बोलना, पढ़ना और लिखना सिखाता है।

आइए, पुनरावृति करें

- भाषा का आरंभ संकेतों से हुआ और पूर्ण विकास लिखित रूप में हुआ।
- भाषा के प्रचलित रूप तीन – मान्य रूप दो – लिखित और मौखिक।
- भारत की राजभाषा हिंदी है। प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।
- भाषा का क्षेत्रीय रूप बोली कहलाता है।
- लिखित रूप का संचित कोश साहित्य कहलाता है।
- साहित्य के दो रूप होते हैं– 1. गद्य साहित्य 2. पद्य साहित्य
- भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को भाषा और बोली में अंतर स्पष्ट करते हुए संपूर्ण पाठ का विश्लेषण करें।

EDTONE INTERNATIONAL

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) मनुष्य को भाषा की आवश्यकता क्यों है?

(ख) भाषा के किस रूप का प्रचलन सबसे पहले हुआ?

(ग) क्या सांकेतिक भाषा को मान्यता प्राप्त है? बताइए।

(घ) साहित्य के कितने प्रकार हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भाषा से आप क्या समझते हैं? भाषा और बोली में क्या अंतर है? लिखिए।

(ख) मातृभाषा से क्या तात्पर्य है? बच्चा यह भाषा कहाँ से सीखता है?

(ग) लिपि से आप क्या समझते हैं?

(घ) हमें व्याकरण की आवश्यकता क्यों होती है?

2. दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) मूक भाषा आज भी प्रचलित है। ☐

(ख) भारतीय संविधान में केवल 15 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ☐

(ग) भाषा के केवल लिखित और मौखिक रूप को ही मान्यता प्राप्त है। ☐

(घ) बोली का अपना कोई साहित्य नहीं होता। ☐

(ङ) साहित्य संचय का माध्यम भाषा का लिखित रूप है। ☐

3. सही मिलान कीजिए।

(क)	भाषा में एकरूपता लाना	(i)	हिंदी एवं अंग्रेज़ी
(ख)	मराठी भाषा की लिपि	(ii)	मातृभाषा
(ग)	राष्ट्र के कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा	(iii)	देवनागरी
(घ)	बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली प्रथम भाषा	(iv)	मानक भाषा

EDITONE INTERNATIONAL

सोचें-विचारें

Critical Thinking

4. आप भाषा के बिना किसी राष्ट्र की कल्पना कर सकते हैं? सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

5. भारतीय संविधान में वर्णित भाषाओं को लिखिए।

6. अपने मन-पंसद प्रदेश का नाम लिखिए। पसंद का कारण बताते हुए उस प्रदेश की भाषा, लिपि, पहनावा और खान-पान आदि की जानकारी दीजिए। उससे संबंधित चित्र भी चिपकाइए।

प्रेरणादायक मूल्य

भाषा/बोली और व्यवहार इंसान के व्यक्तित्व का परिचय देता है। अत: हमें अपनी भाषा और बोली में मधुरता बनाए रखनी चाहिए ताकि दूसरे व्यक्ति पर हमारा सकारात्मक प्रभाव पड़े।

EDITONE INTERNATIONAL

अध्याय 2

वर्ण-विचार
(Phonology)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! पिछले अध्याय में हमने लिपि के बारे में अध्ययन किया। अब जानेंगे कि लिपि को लिखने के लिए जो चिह्न निश्चित किए गए हैं, उन्हें वर्ण कहते हैं।

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है।

उदाहरण–

साइकिल = स् + आ + इ + क् + + इ + ल् + अ

रेडियो = र् + ए + ड् + इ + य् + ओ

छोटी-छोटी ध्वनियों को ही वर्ण कहा जाता है।

भाषा की वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसको विभाजित न किया जा सके, वर्ण कहलाता है।

वर्ण के दो वर्ग–

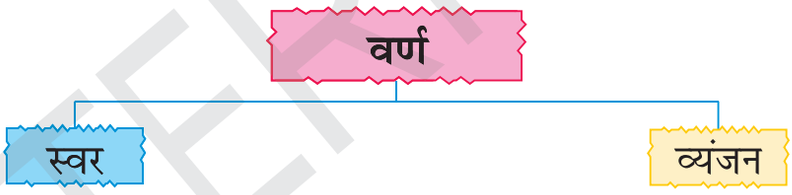

स्वर– ऐसे वर्ण जिन्हें उच्चारित करते समय कंठ से निकलने वाली वायु बिना रुकावट के बाहर आती है तथा जिसके उच्चारण के दौरान किसी दूसरे वर्ण की सहायता नहीं ली जाती, उन्हें स्वर कहते हैं।

हिंदी वर्ण में स्वरों की संख्या 11 है।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

स्वर के भेद– स्वरों को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है–

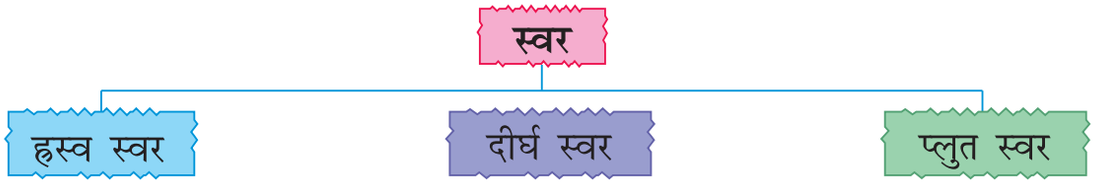

ह्रस्व स्वर (Short Vowels)– ऐसे वर्ण जिनके उच्चारण में सबसे कम समय लगता है। ये संख्या में कुल चार हैं– अ, इ, उ, ऋ।

दीर्घ स्वर (Long Vowels)– ऐसे स्वरों का उच्चारण ह्रस्व स्वरों से दोगुने समय में किया जाता है। ये कुल सात हैं– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

प्लुत स्वर (Longer Vowels)– जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वर या ह्रस्व स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इनका प्रयोग किसी को पुकारने के लिए किया जाता है; जैसे– ओ३म्, रा३म् आदि। परंतु सामान्यत: हिंदी में इन्हें लिखा नहीं जाता।

स्वरों की मात्राएँ–

स्वर	मात्रा	स्वरयुक्त शब्द	मात्रायुक्त शब्द		
			आदि	मध्य	अंत
अ	—	अब	अब	कमल	जब
आ	ा	आप	बाम	अचार	नया
इ	ि	इस	किस	अनिल	गति
ई	ी	ईश	कील	सुनील	डाली
उ	ु	उस	कुल	साबुन	लघु
ऊ	ू	ऊपर	सूप	बातूनी	आलू
ऋ	ृ	ऋषि	कृषि	आकृति	मातृ
ए	े	एक	देवा	विवेक	किनारे
ऐ	ै	ऐसा	कैसा	सदैव	है
ओ	ो	ओर	मोर	चकोर	चलो
औ	ौ	और	भौरा	मंगौड़ा	जौ

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को वर्ण एवं उसके विच्छेद को समझाएँ तथा उसके भेदों से भी अवगत कराएँ।

अयोगवाह– 'अं' और 'अः' इन्हें न तो स्वर कहा जाता है और न ही व्यंजन। इन वर्णों को अयोगवाह कहा जाता है। इन्हें अयोगवाह ध्वनि भी कहते हैं। वस्तुतः ये स्वर नहीं हैं, स्वर वर्णों की भाँति इनकी मात्राएँ नहीं बल्कि चिह्न होते हैं। ये हैं– (ं , ः)।

अनुनासिक स्वर (Nasal Vowels)– जब किसी स्वर वर्ण का उच्चारण करते समय मुख और नाक दोनों से वायु निकले, तो उस वर्ण के ऊपर चंद्रबिंदु लगता है; जैसे– कुआँ, अँधेरा, चाँद आदि।

जिन स्वरों की मात्राओं को शीर्ष रेखा के ऊपर लगाया जाता है, वहाँ चंद्रबिंदु के स्थान पर (ं) बिंदु का प्रयोग होता है। जैसे– मैँ (✗), मैं (✓); नहीँ (✗), नहीं (✓) आदि।

अनुस्वार (Nasal Consonants)– अनुस्वार का प्रयोग स्पर्श व्यंजन के प्रत्येक वर्ग के 'अ' रहित पंचम अक्षर के स्थान पर किया जाता है; जैसे–

क	वर्ग	ङ्	→	गङ्गा	→	गंगा
च	वर्ग	ञ्	→	चञ्चल	→	चंचल
ट	वर्ग	ण्	→	पण्डित	→	पंडित
त	वर्ग	न्	→	हिन्दी	→	हिंदी
प	वर्ग	म्	→	कम्पन	→	कंपन

विसर्ग(:) – इस ध्वनि का उच्चारण 'ह' के समान होता है। विसर्ग को केवल संस्कृत शब्दों के लिए ही प्रयोग में लाते हैं; जैसे– प्रातः, पुनः, अतः आदि।

व्यंजन (Consonants)– ऐसे वर्ण जिन्हें स्वर की सहायता से बोला जाता है अर्थात् जिनके उच्चारण के दौरान हवा रुककर या रगड़ खाकर मुँह से बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

व्यंजन के भेद– 1. स्पर्श व्यंजन 2. अंतःस्थ व्यंजन 3. ऊष्म व्यंजन

1. **स्पर्श व्यंजन–** जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु उच्चारण स्थान विशेष का स्पर्श करती हुई निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। ये निम्नलिखित हैं–

वर्ग का नाम	उच्चारण स्थान	ध्वनियाँ	प्रकार
क वर्ग	कंठ	क, ख, ग, घ, ङ	कंठ्य
च वर्ग	तालु	च, छ, ज, झ, ञ	तालव्य
ट वर्ग	मूर्धा	ट, ठ, ड, ढ, ण	मूर्धन्य
त वर्ग	दाँत	त, थ, द, ध, न	दंत्य
प वर्ग	ओष्ठ	प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ्य

EDITONE INTERNATIONAL

2. **अंत:स्थ व्यंजन** (Semi-vowels)– ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय स्वरों तथा व्यंजनों के मध्य में प्रयोग करते हैं, इन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं। इन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुँह के किसी भाग को स्पर्श नहीं करती। ये संख्या में चार हैं। य, र, ल, व।

3. **ऊष्म व्यंजन** (Furicative) – ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय हवा की गति के कारण मुँह में रगड़ खाने से ऊष्मा पैदा होती है इसलिए इन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये भी संख्या में चार हैं– श, ष, स, ह।

नासिक्य व्यंजन– जिन व्यंजनों के उच्चारण के समय प्राणवायु, अधिकांश रूप से नाक से निकलती है, उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं; जैसे– ङ, ञ, ण, न, म।

आगत ध्वनियाँ– विदेशी भाषाओं के प्रभाव से हिंदी में ऑ, ज़, फ़ आदि ध्वनियाँ आ गई हैं। कुछ शब्दों के भेद को स्पष्ट करने के लिए इनका प्रयोग आवश्यक हो जाता है; जैसे– हॉल, बॉल, चॉक, ज़मीन, दफ़्तर आदि।

बॉल

फर्ज़
(अपना फर्ज़ पूरा करो)

संयुक्त व्यंजन– क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं।

क्ष = क् + ष त्र = त् + र

ज्ञ = ज् + ञ श्र = श् + र

द्वित्व व्यंजन– जब एक व्यंजन ध्वनि को समान ध्वनि से जोड़ा जाता है, तो उसे द्वित्व व्यंजन कहा जाता है; जैसे– पक्का, बच्चा, छुट्टियाँ, सट्टा, उल्लास आदि।

वर्ण-विच्छेद– वर्ण-विच्छेद से अभिप्राय है- शब्द के वर्णों को अलग-अलग बताना; जैसे–

किताब– क् + इ + त् + आ+ ब् + अ दिल्ली– द् + इ + ल् + ल् + ई

सैनिक– स्+ ऐ + न् + इ + क् + अ कर्म– क् + अ + + र् + म् + अ

हल चिह्न– इसका प्रयोग व्यंजन के नीचे किया जाता है; जैसे- गद्दा, चिट्ठी आदि।

'र के विभिन्न रूप–

रात

गर्म

चक्र

ट्रक

इन उदाहरणों में 'र' वर्ण को विभिन्न रूपों में प्रयोग किया गया है।

आइए, पुनरावृति करें

- भाषिक ध्वनियों का लिखित रूप वर्ण कहलाता है।
- वर्णों का व्यवस्थित समूह वर्णमाला कहलाता है।
- वर्णों के दो भेद हैं– 1. स्वर 2. व्यंजन।
- स्वर के तीन भेद हैं– 1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर।
- व्यंजन के तीन भेद हैं– स्पर्श व्यंजन, अंत:स्थ एवं ऊष्म व्यंजन।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वर्णों से आप क्या समझते हैं?
(ख) हिंदी में स्वरों की संख्या कितनी होती है?
(ग) स्वरों के भेदों को सोदाहरण बताइए।
(घ) व्यंजन कितने प्रकार के होते हैं? नाम बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) संयुक्त व्यंजन का निर्माण कैसे होता है?
(ख) द्वित्व व्यंजन से क्या अभिप्राय है?
(ग) अनुस्वार वर्ण तथा अनुनासिक वर्ण में अंतर लिखिए।
(घ) अंत:स्थ व्यंजन कितने हैं? नाम लिखिए।

2. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) वर्णों के व्यवस्थित समूह को ..... कहते हैं।
(ख) गत्ता और भत्ता ..... के उदाहरण हैं।
(ग) स्वरों की सहायता से उच्चरित होने वाले वर्ण ..... कहलाते हैं।
(घ) किसी शब्द के वर्णों को विच्छेदित करना ..... कहलाता है।
(ङ) क्ष, त्र, ज्ञ और श्र ..... व्यंजन है।

3. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) भाषा की सबसे छोटी ध्वनि को क्या कहते हैं?

☐ शब्द ☐ वाक्य ☐ वर्ण ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) बंदर और कंधा शब्दों में प्रयोग किया गया है–

☐ अनुस्वार ☐ अनुनासिक ☐ विसर्ग ☐ स्वर

EDITONE INTERNATIONAL

(ग) व्यंजनों का उच्चारण होता है–

☐ स्वतंत्र ☐ स्वरों पर आश्रित ☐ बिना स्वरों के ☐ कोई नहीं

4. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए।

(क) शरबत – ..... (ख) आदर – .....

(ग) शिक्षा – ..... (घ) भक्ति – .....

5. दिए गए शब्दों में यथास्थान अनुस्वार अथवा अनुनासिक के चिह्न लगाइए।

लगर – ..... माग – ..... महगा – .....

सग – ..... चाद – ..... अधा – .....

6. दिए गए व्यंजनों के साथ दी गई मात्राओं का प्रयोग करके एक-एक शब्द लिखिए।

त् + आ = ... ल् + आ = ...

प् + ऐ = ... म् + आँ = ...

क्+ इ = ... व + ई = ...

सोचें-विचारें

Critical Thinking

7. हिंदी भाषा को बोलने के लिए वर्णमाला की आवश्यकता होती है जिसके लिए वर्णों का ज्ञान होना बेहद आवश्यक होता है, तो जरा सोचिए! यदि वर्ण को उच्चारित करते समय स्वर न होते तो व्यंजन का उच्चारण संभव हो पाता?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

8. वर्ग-पहेली में कुछ सार्थक शब्द लिखे हैं, उन्हें ढूँढ़कर लिखिए।

ब	र	सा	त	उ	प	जा	ऊ
वा	णी	उ	प	जा	ऊ	बु	रा
व	र्षा	सु	प्र	भा	त	ढ़ा	ष
शा	स	न	क	वि	त्री	पा	ट्र
वि	श	वा	स	ख	लि	हा	न
क	सू	क्ष	म	वि	स्र	ता	र
वि	मं	दि	र	पु	जा	रि	न
अ	चा	न	क	सु	ब	ह	द

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रेरणादायक मूल्य

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।।

EDITONE INTERNATIONAL